८. पर्यटन और इतिहास

८.१ पर्यटन की परंपरा
८.२ पर्यटन के प्रकार
८.३ पर्यटन का विकास
८.४ ऐतिहासिक स्थलों का संरक्षण और संवर्धन
८.५ पर्यटन एवं आतिथ्य क्षेत्र में व्यवसाय के अवसर

८.१ पर्यटन की परंपरा

प्राचीन समय से हमारे देश में पर्यटन की परंपरा चली आ रही है । तीर्थाटन करना, स्थानीय धार्मिक-सांस्कृतिक मेलों में जाना, विद्यार्जन हेतु दूर के प्रदेश में जाना, व्यापार करने के लिए दूर-दूर तक जाना आदि कारणों से पूर्व समय में पर्यटन हो जाता था । संक्षेप में कहना हो तो; मनुष्य को बहुत पहले से घूमना अच्छा लगता है ।

क्या, आप जानते हैं ?

लोगों में जागृति उत्पन्न करने के लिए स्वयं गौतम बुद्ध ने भारत के अनेक प्राचीन नगरों का पर्यटन किया । यह उल्लेख बौद्ध वाङ्मय में मिलता है । बौद्ध भिक्खुओं को निरंतर भ्रमण करते रहना आवश्यक था । साथ ही; जैन मुनि और साधु भी लगातार भ्रमण करते रहते थे ।

६३० ई. में चीनी यात्री युआन श्वांग चीन से भारत आया था । मध्ययुग में संत नामदेव, संत एकनाथ, गुरु नानकदेव, रामदास स्वामी भारत भ्रमण करते थे ।

पर्यटन : विशिष्ट उद्देश्य को लेकर दूर-दूर के स्थानों की सैर करने जाना ही पर्यटन कहलाता है ।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में थॉमस कुक ने ६०० लोगों की लीस्टर से लाफबरो इस रेल सैर का आयोजन किया । संपूर्ण यूरोप की भव्य वृत्ताकार

क्या, आप जानते हैं ?

संसार के प्रथम यूरोपीय खोजी यात्री के रूप में बेंजामिन टयूडेला विख्यात है । उसका जन्म स्पेन में हुआ । ११५९ ई. से ११७३ ई. के बीच उसने फ्रांस, जर्मनी, इटली, ग्रीक, सीरिया, अरबस्तान, इजिप्त, इराक, पर्शिया (ईरान), भारत और चीन देशों की यात्राएँ कीं । उसने अपनी यात्रा के अनुभव दैनंदिनी (डायरी) में लिखे । यह दैनंदिनी इतिहास का महत्त्वपूर्ण अभिलेख (दस्तावेज) है ।

मार्को पोलो : तेरहवीं शताब्दी में इतालवी यात्री मार्को पोलो ने एशिया महाद्वीप और विशेष रूप से चीन का यूरोप से परिचय कराया । वह १७ वर्ष चीन में रहा । एशिया की प्रकृति, सामाजिक जीवन, सांस्कृतिक जीवन और व्यापार का परिचय संसार से कराया । इस कारण यूरोप और एशिया के बीच संवाद और व्यापार प्रारंभ हुआ ।

इब्न बतूता : चौदहवीं शताब्दी का एक यात्री इब्न बतूता है; जिसने इस्लामी विश्व की प्रदीर्घ यात्रा कराई । इब्न बतूता तीस वर्षों तक पूरे संसार में घूमता रहा । उसने अपनी नीति बनाई थी कि एक ही मार्ग से दो बार यात्रा नहीं करनी है । मध्ययुगीन इतिहास और सामाजिक जीवन को समझने के लिए बतूता का लेखन उपयुक्त है ।

गेरहार्ट मर्केटर : सोलहवीं शताब्दी में गेरहार्ट मर्केटर संसार का मानचित्र और संसार का भूगोलक बनाने वाले मानचित्र आरेखक के रूप में प्रसिद्ध है । उसके कारण यूरोप में शोध अभियानों को गति प्राप्त हुई ।

सैर सफलतापूर्वक संपन्न कराई । कुक ने ही पर्यटक टिकट बेचने का एजेंसी का व्यवसाय प्रारंभ किया । इसके द्‌वारा आधुनिक युग का आरंभ हुआ ।

क्या, आप जानते हैं ?

तीर्थाटन करने हेतु देश के एक कोने से दूसरे कोने तक पैदल यात्रा करने की परंपरा भारत में पहले से प्रचलित थी । विष्णुभट गोडसे ने महाराष्ट्र से उत्तर में अयोध्या तक और वहाँ से पुनः महाराष्ट्र तक की यात्रा का वर्णन लिख रखा है । उनके इस यात्रावर्णन की पुस्तक का नाम 'माझा प्रवास' (मेरी यात्रा) है । इस पुस्तक की विशेषता यह है कि विष्णुभट ने यह यात्रा १८५७ ई. के राष्ट्रीय विद्रोह के कालखंड में की थी । राष्ट्रीय विद्रोह की अनेक बातों के वे गवाह थे । अतः इस पुस्तक द्‌वारा राष्ट्रीय विद्रोह और विशेष रूप से रानी लक्ष्मीबाई के जीवन के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त होती है । यही नहीं अपितु अठारहवीं शताब्दी में प्रचलित मराठी भाषा का स्वरूप भी हमारे ध्यान में आता है । यह पुस्तक तत्कालीन इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण साधन है ।

८.२ पर्यटन के प्रकार

आधुनिक समय में पर्यटन एक स्वतंत्र स्थानीय, अंतर्देशीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय व्यवसाय का स्वरूप धारण कर चुका है । देश और विदेश की पुरातन वास्तुओं, इतिहासविख्यात और प्रकृतिरम्य स्थानों, प्राचीन कलानिर्माण के केंद्रों, तीर्थस्थानों, औद्‌योगिक और अन्य परियोजनाओं आदि की सैर करना पर्यटन में निहित मुख्य प्रेरणा होती है । प्रकृतिनिर्मित और मानवनिर्मित बातों की रम्यता और भव्यता का प्रत्यक्ष अनुभव लेने की इच्छा संसारभर के पर्यटकों में होती है । अतः बर्फीले शिखर, समुद्री किनारे, घने जंगल जैसे उपेक्षित क्षेत्रों का समावेश पर्यटन में हुआ है । उनपर दृश्य-श्रव्य प्रसार माध्यमों द्‌वारा कार्यक्रम बनाए जाने लगे । मोटे तौर पर पर्यटन के स्थानीय, अंतर्देशीय, अंतर्राष्ट्रीय, धार्मिक, ऐतिहासिक, स्वास्थ्यपूरक, विज्ञान, कृषि, प्रासंगिक, क्रीड़ा पर्यटन ये प्रकार हैं ।

स्थानीय और अंतर्देशीय पर्यटन : यह यात्रा बड़ी सुगम होती है । यह यात्रा देश के भीतर ही चलती है । इस यात्रा में भाषा, मुद्रा, कागजात की अधिक बाधा नहीं होती है । विशेष बात तो यह होती है कि हमारे पास उपलब्ध समय के अनुसार हम ऐसी यात्रा की योजना कर सकते हैं ।

अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन : जहाज, रेल और विमान के फलस्वरूप अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन करना पहले की अपेक्षा आसान हो गया है । जहाजों के कारण समुद्री तट के देश एक-दूसरे से जोड़े गए । रेल की पटरियों ने यूरोप को जोड़ दिया । विमानों द्‌वारा पूरी दुनिया एक-दूसरे के समीप आ गई । आर्थिक उदारीकरण के बाद भारत से विदेश में जाने वालों और विदेश से आने वालों की संख्या में वृद्‌धि हुई है । अध्ययन, मनोरंजन, स्थलदर्शन, व्यावसायिक कार्य (बैठकें, अनुबंध करना आदि) फिल्मों की शूटिंग जैसे कामों के लिए देश-विदेश में आने-जाने वाले पर्यटकों की संख्या बढ़ गई है ।

ऐतिहासिक पर्यटन : यह पूरे विश्व का महत्त्वपूर्ण पर्यटन प्रकार है । लोगों को इतिहास के संदर्भों को लेकर जो जिज्ञासा होती है; उसे ध्यान में रखकर ऐतिहासिक पर्यटन-सैर का आयोजन किया जाता है । महाराष्ट्र में छत्रपति शिवाजी महाराज द्‌वारा निर्मित किलों/गढ़ों के दुर्ग अध्येता गोपाल नीलकंठ दांडेकर दुर्गभ्रमण सैर का आयोजन करते थे । भारत में राजस्थान के किले, महात्मा गांधी और आचार्य विनोबा भावे के आश्रम, १८५७ ई. के राष्ट्रीय विद्रोह से संबंधित स्थान जैसे ऐतिहासिक स्थानों की सैर का आयोजन किया जाता है ।

भौगोलिक पर्यटन : विभिन्न भौगोलिक विशेषताओं का निरीक्षण करने हेतु पर्यटन किया जाता है । अभयारण्य, वैली ऑफ फ्लॉवर्स (उत्तराखंड),

समुद्री किनारे, भौगोलिक वैशिष्ट्यपूर्ण स्थान (जैसे- बुलढाणा की लोणार झील, निघोज के रांजणखलगे (कुंभगर्तिका) आदि का समावेश भौगोलिक पर्यटन में होता है । इनमें से अनेक स्थानों की प्रकृति का अवलोकन करने की इच्छा और कुतूहल को लेकर अनेक पर्यटन इन स्थानों पर जाते हैं ।

वैली ऑफ फ्लॉवर्स

मालूम कर लें

विश्व के विभिन्न समाज के लोग अनेक स्थानों पर बिखरे हुए हैं । उनमें प्रचलित पुराणकथाएँ और उन पुराणकथाओं से जोड़े गए भौगोलिक स्थानों के कारण उनके बीच एकात्मता की भावना बनी रहती है । अतः उन स्थानों पर जाना महत्त्वपूर्ण बन जाता है । परिणामस्वरूप धार्मिक पर्यटन को प्रारंभ होता है । जैसे - चार धामों, बारह ज्योतिर्लिंगों की यात्रा । इनमें से अधिकांश स्थानों पर लोगों को सुविधाएँ प्राप्त हों; इसलिए पुण्यश्लोक अहल्याबाई होलकर ने अपने व्यक्तिगत धन से समाजोपयोगी कार्य किए हैं ।

स्वास्थ्य पर्यटन : भारत में मिलनेवाली चिकित्सा संबंधी सेवाएँ और सुविधाएँ पाश्चात्यों की दृष्टि से सस्ती और उत्तम श्रेणी की होती हैं । परिणामस्वरूप विदेशी लोग भारत में आने लगे हैं । भारत में विपुल मात्रा में सूर्यप्रकाश होता है । उसका लाभ प्राप्त करने के लिए अनगिनत लोग भारत में आते हैं । योग शिक्षा और आयुर्वेदिक उपचार हेतु विदेशी पर्यटक भारत में आते हैं ।

कृषि पर्यटन : शहरी संस्कृति में पले-बढ़े और कृषि जीवन से अनजान लोगों के लिए कृषि पर्यटन एक प्रकार है । वर्तमान समय में कृषि पर्यटन शीघ्रता से आगे बढ़ रहा है । वर्तमान समय में किसान दूर-दूर के कृषि अनुसंधान केंद्रों, कृषि विश्वविद्यालयों, कृषि क्षेत्र में नव-नवीन प्रयोगों द्वारा नया तकनीकी विज्ञान विकसित करने वाले इजरायल जैसे देशों में कृषि के आधुनिक तकनीकी विज्ञान की जानकारी प्राप्त करने के लिए जाने लगे हैं ।

क्रीड़ा पर्यटन : बीसवीं शताब्दी में खेल पर्यटन इस नए पर्यटन का उदय हुआ है । विश्व स्तर पर ओलिंपिक, विंबल्डन और विश्व शतरंज प्रतियोगिता, अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट की प्रतियोगिताएँ तो भारतीय स्तर पर हिमालयीन कार रैली और महाराष्ट्र के स्तर पर महाराष्ट्र केसरी कुश्ती प्रतियोगिता जैसी प्रतियोगिताओं के प्रकार हैं । इन प्रतियोगिताओं को देखने जाना खेल पर्यटन कहलाता है ।

प्रासंगिक पर्यटन : मनुष्य पर्यटन अर्थात घूमने के कारण ढूँढ़ता रहता है । इक्कीसवीं शताब्दी में ऐसे अनेक अवसर उपलब्ध हुए हैं । जैसे-विश्व के अनेक देशों में फिल्म फेस्टिवल्स, सम्मेलन, अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक प्रदर्शनियाँ आदि । इन उद्देश्यों को लेकर लोग विभिन्न स्थानों पर जाते रहते हैं । महाराष्ट्र के साहित्यप्रेमी भी प्रतिवर्ष आयोजित किए जाने वाले अखिल भारतीय मराठी साहित्य सम्मेलनों में सम्मिलित होने के लिए जाते हैं ।

चलिए... खोजेंगे

उपर्युक्त प्रकारों के अतिरिक्त विज्ञानविषयक पर्यटन, मनोरंजन, सांस्कृतिक पर्यटन और समूह पर्यटन प्रकारों की जानकारी शिक्षक और अंतरजाल (इंटरनेट) की सहायता से खोजेंगे ।

८.३ पर्यटन का विकास

देशी और विदेशी पर्यटकों में उद्बोधन अथवा जनजागरण उत्पन्न करना सब से महत्त्वपूर्ण मुद्दा है ।

पर्यटन में पर्यटकों अथवा सैलानियों को परिवहन और सुरक्षा यात्रा में मिलने वाली सुख-सुविधाएँ, उत्तम श्रेणी के निवास स्थानों की उपलब्धता, यात्रा में स्वच्छतागृहों की सुविधाएँ जैसी बातों को प्राथमिकता देना आवश्यक है । इसमें दिव्यांग पर्यटकों की आवश्यकताओं की ओर विशेष ध्यान देना आवश्यक है ।

मालूम कर लें

स्वच्छ भारत अभियान की जानकारी प्राप्त कीजिए ।

ऐतिहासिक विरासत का संवर्धन करने हेतु हमें कुछ बातों की सावधानी रखना आवश्यक है । ऐतिहासिक विरासत के स्थानों का विद्रूपीकरण करना, उन स्थानों की दीवारों पर लिखना अथवा पेड़ों पर उकेरकर लिखना, पुरानी वास्तु को भड़कीले रंगों में रँगना, परिसर स्थानों पर सुविधाओं का अभाव होना जिससे अस्वच्छता बढ़ती/फैलती है; जैसी बातों को टालना चाहिए ।

बताइए तो ?

- हमें पर्यटकों के लिए कौन-कौन-सी सुविधाएँ उपलब्ध करानी चाहिए ?
- पर्यटकों के साथ स्थानीय व्यक्ति के नाते आप कैसा व्यवहार करेंगे ?

विश्व स्तर की महत्त्वपूर्ण भाषाओं में जानकारी पुस्तिकाएँ, मार्गदर्शिकाएँ, मानचित्र, इतिहासविषयक पुस्तकें उपलब्ध करा देना आवश्यक है । पर्यटकों को गाड़ी में घुमाने ले जानेवाले वाहन चालकों को दुभाषिये का प्रशिक्षण देना, मार्गदर्शक के रूप में उनका काम करना जैसी बातें की जा सकती हैं ।

८.४ ऐतिहासिक स्थानों का संरक्षण और संवर्धन

ऐतिहासिक स्थानों का संरक्षण और संवर्धन करना एक बहुत बड़ी चुनौती है । हमारे देश को प्राचीन, मध्ययुगीन और आधुनिक ऐतिहासिक स्थानों की विरासत प्राप्त है । साथ ही; हमें प्राकृतिक संपन्नता की विरासत भी प्राप्त है । इस विरासत के दो प्रकार- प्रकृतिनिर्मित (प्राकृतिक) और मानवनिर्मित (सांस्कृतिक) हैं । भारत में कुछ ऐसे महत्त्वपूर्ण स्थान हैं जिनको पूरे विश्व में गौरवान्वित किया गया है । उनमें ताज महल और जंतर-मंतर वेधशाला के साथ-साथ महाराष्ट्र की अजिंठा (अजंता), वेरुल (एलोरा), घारापुरी (एलिफंटा) की गुफाएँ, छत्रपति शिवाजी महाराज रेल स्थानक, पश्चिम घाट में कास पठार का समावेश है ।

घारापुरी की गुफाएँ

करके देखें-

अंतरजाल की सहायता से भारत के सांस्कृतिक, प्राकृतिक और मिश्रित ऐतिहासिक विरासत स्थानों के चित्रों का संग्रह बनाइए ।

कास पठार

वैश्विक विरासत स्थानों की सैर करने की इच्छा विश्वभर के पर्यटकों को होती है । इन विरासत स्थानों को देखने के लिए विदेश से असंख्य लोग आते हैं । वैश्विक विरासत स्थानों में भारत के किसी स्थान को चुने जाने पर हमारी छाती तन जाती है, परंतु जब हम सैर के बहाने ऐसे स्थानों पर जाते हैं तो हमें क्या दिखाई देता है ? स्थानों के परिसर में पर्यटक द्‌वारा खड़िया-कोयले से अपने नाम लिखे गए हैं, चित्र बनाए हैं । इसका विपरीत परिणाम हमारे देश की छवि पर होता है । पर्यटन स्थानों के संरक्षण हेतु निम्न संकल्प करना आवश्यक है ।

(१) मैं पर्यटन स्थानों पर स्वच्छता बनाए रखूँगा /रखूँगी । कूड़ा-करकट कहीं नहीं फेंकूँगा/फेंकूँगी ।

(२) किसी भी ऐतिहासिक वास्तु के सौंदर्य को नष्ट नहीं करूँगा/करूँगी ।

८.५ पर्यटन और आतिथ्य क्षेत्र में व्यवसाय के अवसर

पर्यटन सर्वाधिक रोजगार निर्माण करने वाला उद्‌योग बन सकता है । यदि हम पर्यटन की ओर व्यावसायिक दृष्टिकोण से ध्यान देंगे तो यह एक स्थायी स्वरूप का व्यवसाय है । इसमें नव-नवीन प्रयोग करने के लिए विपुल अवसर हैं ।

पर्यटन के कारण अनगिनत लोगों के लिए रोजगार के अवसर उपलब्ध होते हैं । विदेशी पर्यटक जब हवाई अड्डे पर पाँव रखता है; उसके पहले से वह उस देश को आय प्राप्त करा देना शुरू करता है; जिस देश में वह पर्यटन करने हेतु जाता है । उसके द्‌वारा दी गई वीजा फीस के कारण हमारे देश को राजस्व प्राप्त होता है । यात्रा व्यय, होटल में रहना, खाना, दुभाषिये की सहायता लेना, समाचारपत्र, संदर्भ साहित्य खरीदना, स्मृति के रूप में स्थानीय वस्तुएँ खरीदना जैसी बातें वह विदेशी पर्यटक अपने देश जाने तक करता है ।

पर्यटन केंद्रों के परिसर में बाजार फैलते जाते हैं । वहाँ हस्त उद्‌योग और कुटीरोद्‌योग का विकास होता है । उन उद्‌योगों की वस्तुओं के क्रय-विक्रय में वृद्‌धि होती है । जैसे-स्थानीय खाद्‌य पदार्थ, हस्तकला की वस्तुएँ आदि । पर्यटक इन वस्तुओं को बड़े चाव से खरीदते हैं । परिणामस्वरूप स्थानीय लोगों के रोजगार में वृद्‌धि होती है ।

विरासत की घुमक्कड़ी (हेरीटेज वॉक) : ऐतिहासिक विरासत स्थानों की सैर करने जाने को 'हेरीटेज वॉक' कहते हैं । जहाँ इतिहास घटित हुआ है; वहाँ प्रत्यक्ष जाकर इतिहास को समझना; यह बोध हेरीटेज वॉक में आता है ।

इस प्रकार के उपक्रम संपूर्ण विश्व में चलाए जाते हैं । भारत का इतिहास शताब्दियों का रहा है । भारत के प्रत्येक राज्य में ऐतिहासिक स्थान हैं । उनमें प्राचीन, मध्ययुगीन और आधुनिक स्थानों का समावेश होता है । गुजरात के अहमदाबाद शहर का हेरीटेज वॉक प्रसिद्‌ध है । महाराष्ट्र में मुंबई-पुणे आदि शहरों में ऐसे उपक्रमों का आयोजन किया जाता है । फलतः ऐतिहासिक वास्तु/भवनों का संरक्षण करना, उनकी जानकारी इकट्‌ठी करना और उसे विविध माध्यमों द्‌वारा विश्वभर में पहुँचाना आदि उपक्रम चलाए जाते हैं। ऐतिहासिक महापुरुषों के निवासस्थान भी ऐतिहासिक विरासत होते हैं । कहीं-कहीं ऐसे स्थानों पर नीली तख्तियाँ लगाने की पद्‌धति प्रचलित है ।

करके देखें-

अपने परिसर के ऐतिहासिक स्थानों की सैर पर जाने के लिए शिक्षकों की सहायता से विरासत घुमक्कड़ी का आयोजन कीजिए ।

महाराष्ट्र में पर्यटन का विकास : पर्यटन की दृष्टि से महाराष्ट्र वैभवशाली विरासत प्राप्त राज्य है। अजिंठा, वेरुल, घारापुरी (एलिफंटा) जैसी विश्वविख्यात श्रेणी की गुफाएँ, चित्र और शिल्प, पंढरपुर, शिर्डी, शेगाँव, तुलजापुर, कोल्हापुर,

नाशिक, पैठण, त्र्यंबकेश्वर, देहू, आलंदी, जेजुरी आदि अनेक धार्मिक स्थान, हाजी मलंग, नांदेड़ का गुरुद्वारा, मुंबई का माउंट मेरी चर्च, महाबलेश्वर, पाचगणी, खंडाला, लोणावला, माथेरान, चिखलदरा ये ठंडी हवा के स्थान, कोयनानगर, जायकवाड़ी, भाटघर, चाँदोली बाँध, दाजीपुर, सागरेश्वर, ताड़ोबा अभयारण्य ये सभी महाराष्ट्र के महत्त्वपूर्ण पर्यटन स्थान हैं ।

१९७५ ई. में 'महाराष्ट्र पर्यटन विकास महामंडल' (निगम) की स्थापना की गई । परिणामस्वरूप पर्यटन विकास को प्रोत्साहन मिला है । इस महामंडल की ओर से राज्य में ४७ स्थानों पर पर्यटकों के निवास की सुविधा की गई है । इसमें लगभग चार हजार से अधिक पर्यटकों के रहने की व्यवस्था हो जाती है । इसी के साथ-साथ; इस व्यवसाय में अनेक निजी व्यवसायी भी उतर आए हैं ।

क्या, आप जानते हैं ?

भारत में प्रथम अनूठा 'पुस्तकांचे गाव' (पुस्तकों का गाँव)

महाबलेश्वर के निकट भिलार नामक गाँव है । यह गाँव प्राकृतिक सुंदरता और स्ट्रॉबेरी की मिठास लिये हुए है । इस पुस्तक के गाँव में अनेक घरों में पर्यटकों के लिए पुस्तकें उपलब्ध हैं । वाचन आंदोलन का प्रचार हो, मराठी भाषा के नए-पुराने लेखक, संत साहित्य, कहानी-उपन्यास, कविताएँ, ललित साहित्य, चरित्र-आत्मचरित्र, नारी साहित्य, खेलकूद, बालसाहित्य से खिले हुए हरे-भरे विश्व में आप 'वाचन का आनंद' लें; इसके लिए महाराष्ट्र सरकार द्वारा यह परियोजना चलाई गई है ।

यदि आप घूमने के लिए महाबलेश्वर गए तो भिलार गाँव अर्थात पुस्तक के गाँव में अवश्य जाइए ।

क्या, आप जानते हैं ?

महाबलेश्वर, पाचगणी ठंडी हवा के स्थान हैं । यहाँ हजारों पर्यटक चले आते हैं । यहाँ मार्गदर्शक पर्यटकों को कुछ महत्त्वपूर्ण स्थानों की जानकारी बताते हैं । कुछ स्थानों पर ले जाते हैं । कुछ विशिष्ट स्थानों पर फोटोग्राफर फोटो खींच देते हैं । घोड़ेवाले घोड़े पर चक्कर लगवा देते हैं । घोड़ागाड़ी में घुमा ले आते हैं । इन कामों से उन्हें अच्छा रोजगार प्राप्त होता है । इस प्रकार पर्यटन उनकी आजीविका का साधन बन जाता है ।

समझ लें

उत्कृष्ट शिक्षा संस्थानों में जाना, किसी स्थान की स्थानीय संस्कृति, इतिहास, परंपरा और ऐतिहासिक स्मारकों की सैर करना, वहाँ के लोगों द्वारा पाई गई सफलता का अध्ययन करना तथा वहाँ के नृत्य, संगीत और महोत्सव में हिस्सा लेना आदि उद्देश्यों को लेकर किया गया पर्यटन सांस्कृतिक पर्यटन कहलाता है ।

बताइए तो ?

- पर्यटन के कारण आपके परिसर में कौन-कौन-से व्यवसाय प्रारंभ हुए हैं?
- पर्यटन के कारण परिसर में रहनेवाले लोगों के रहन-सहन में क्या परिवर्तन दिखाई देता है ?

स्वाध्याय

१. (अ) दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर कथन पूर्ण कीजिए ।

(१) कुक ने ..... बेचने का व्यवसाय प्रारंभ किया ।
(अ) हस्तकला की वस्तुएँ
(ब) खिलौने
(क) खाद्य वस्तुएँ
(ड) पर्यटन के टिकट

(२) महाबलेश्वर के निकट भिलार ..... गाँव के रूप में प्रसिद्ध है ।
(अ) पुस्तकों का (ब) वनस्पतियों का
(क) आमों का (ड) किलों का

(ब) निम्न में से असत्य जोड़ी को पहचानकर लिखिए ।

(१) माथेरान – ठंडी हवा का स्थान
(२) ताड़ोबा – गुफाएँ
(३) कोल्हापुर – धार्मिक स्थान
(४) अजिंठा (अजंता) – विश्व विरासत स्थान

२. निम्न कथन कारणसहित स्पष्ट कीजिए ।

(१) वर्तमान समय में विदेश जाने वालों की संख्या में वृद्धि हो रही है ।
(२) हमें अपनी प्राकृतिक और सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण करना चाहिए ।

३. टिप्पणी लिखिए ।

(१) पर्यटन की परंपरा (२) मार्को पोलो
(३) कृषि पर्यटन

४. निम्न संकल्पनाचित्र को पूर्ण कीजिए ।

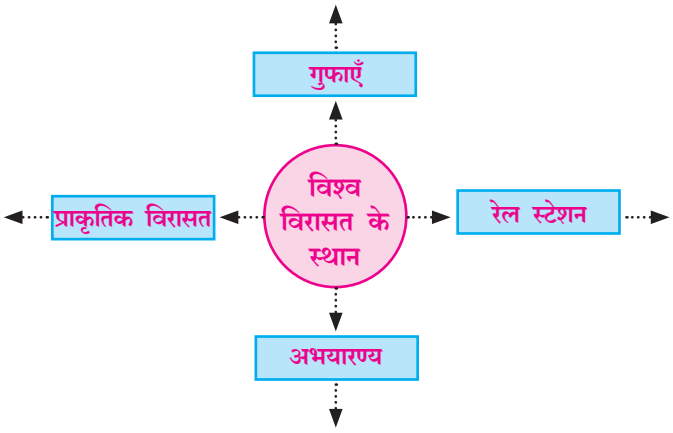

५. निम्न प्रश्नों के उत्तर विस्तार में लिखिए ।

(१) पर्यटन से संबंधित व्यवसाय क्षेत्रों की जानकारी दीजिए ।
(२) पर्यटन के कोई तीन प्रकार स्पष्ट कीजिए ।

उपक्रम

ऐतिहासिक स्थानों के संरक्षण और संवर्धन की आवश्यकता को स्पष्ट कीजिए । इसके लिए कौन-कौन-सी उपाय योजना की जा सकती है, इसपर विचार-विमर्श कीजिए ।

37KIHC